This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1217**

Unique Paper Code : **205503** **F**

Name of the Paper : **हिंदी निबन्ध और अन्य गद्य विधाएँ**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

खण्ड 'क'

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 7+8=15

(क) मजदूरी तो मनुष्य के समष्टि रूप का व्यष्टिरूप परिणाम है, आत्मारूपी धातु के गढ़े हुए सिक्के का नकदी बयान है, जो मनुष्यों की आत्माओं को खरीदने के वास्ते दिया जाता है। जाति-पाँति, रूप-रंग और नाम-धाम तथा बाप-दादे का नाम पूछे बिना ही अपने आपको किसी के हवाले कर देना प्रेम-धर्म का तत्त्व है । जिस समाज में इस तरह के प्रेम-धर्म का राज्य होता है, उसका हर कोई हर किसी को बिना किसी उसका नाम धाम पूछे ही पहचानता है, क्योंकि पूछने वाले का कुल और उसकी जात वहाँ वही होती है जो उसकी जिससे कि वह मिलता है । वहाँ सब लोग एक ही माता-पिता से पैदा हुए भाई-बहन हैं । अपने ही भाई-बहनों के माता-पिता का नाम पूछना क्या पागलपन से कम समझा जा सकता है ?

P.T.O.

अथवा

यह जबरदस्त दृष्टा लोग अब बहुत काल से केवल निर्लिप्त निराकार तटस्थ द्रष्टा की अवस्था में अतृप्त लोचन से देख रहे हैं और न जाने तब तक देखे जावेंगे । अथक ऐसे हैं कि कितने ही तमाशे देख गए, पर दृष्टि नहीं हटाते हैं । उन्होंने पृथ्वीराज जयचंद की तबाही देखी, मुसलमानों की बादशाही देखी । अकबर, बीरबल, खानखाना और तानसेन देखे, शाहजहानी तख्तेताऊस और शाही जुलूस देखे । फिर वही तख्त नादिर को उठाते ले जाते देखा । शिवाजी और औरंगजेब देखे, क्लाइव हेस्टिंग्स से वीर अंग्रेज देखे । देखते-देखते बड़े शौक से लार्ड कर्जन का हाथियों का जुलूस और दिल्ली दरबार देखा। अब गोरे पहलवान मिस्टर सेण्डो का छाती पर कितने ही मन बोझ उठाना देखने को टूट पड़ते हैं । कोई दिखाने वाला चाहिए भारतवासी देखने को सदा प्रस्तुत हैं ।

(ख) भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का सम्बन्ध है यह कहना कठिन है, क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे । भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना । वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं जिसे सार्थकता देने के लिए हमें सुख-दुःख देते हैं उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए मेरे जीवन को घेरे हुए है ।

अथवा

किसी के जीवन-चरित की व्याख्या अलग-अलग तरह से की जा सकती है लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि आदमी खुद अपने बारे में झूठ बोले ! कभी तुम नेताओं ने अपनी शक्ल आईने में देखी है ? कहाँ भगवान श्री रामचन्द्र कहाँ तुम । मनमानी हरकतें करते हो, मनमाने सिद्धांत गढ़ते हो, दूसरों को लूटते हो, अपने स्वार्थ और घमण्ड में तुम लोक-परलोक सब बिसरा बैठे हो, झूठ बोलते हो और दाँत निपोरते हो । बनते हो ऐसे जैसे सन्त हो, सर्वगुण सम्पन्न हो । बकवास ।

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×15=45

(*i*) 'शिवशम्भू के चिट्ठे' में व्यक्त राजनीतिक यथार्थ का विवेचन कीजिए ।

(*ii*) आचार्य शुक्ल करुणा को मनुष्य की प्रकृति में शील व सात्विकता का आदि संस्थापक मनोविकार क्यों मानते हैं – युक्तियुक्त उत्तर दीजिए ।

(*iii*) रांगेय राघव कृत 'अदम्य जीवन' के केन्द्रीय विचार का विश्लेषण कीजिए ।

(*iv*) 'होना कुछ नहीं का' के आधार पर शरद जोशी के गद्य में यथार्थ चित्रण का विवेचन कीजिए ।

(*v*) ललित निबन्ध की दृष्टि से 'तमाल के झरोखे से' की समीक्षा कीजिए ।

खण्ड 'ख'

3. (क) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा के आधार पर उनके बाल जीवन का वर्णन कीजिए । 10

अथवा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा में आए प्रकरण के आधार पर बिहार के भूकंप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(ख) 'जूठन दलित जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति है' की समीक्षा कीजिए । 5

अथवा

हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा में वर्णित उनके जीवन की किन्हीं **तीन** प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए ।

अथवा

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'अपनी खबर' का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए ।